वरदानी मूर्त बनना

'वरदानी' बच्चो की महत्वत्ता के बारे में बाबा ने मुरली में आलेखा है कि

1 जिन्होंने स्वयं को सर्व खजानों से सम्पन्न किया है, वह हैं 'वरदानी' बच्चे।।

2 'वरदानी' बच्चे, स्वयं के जमा किए हुए खजानों को अर्थात् स्वयं की शक्ति, स्वयं के गुण द्वारा, स्वयं के ज्ञान खजाने द्वारा, निर्बल आत्माओं को वरदान द्वारा, हिम्मत, हुल्लास की शक्ति और खुशी का खजाना, अपने सहयोग की शक्ति से देकर, उन कमजोर को शक्तिशाली बना देते हैं।

3 पहला नम्बर है, सहयोग देने वाले।

05.05.75

अव्यक्त पालना का रिटर्न

प्रश्न हमारे, उत्तर बापदादा के

प्रश्न : मीठे बाबा, 'महादानी' बच्चो की क्या महत्वत्ता मुरली में आलेखी है ?

उत्तर : मीठे बच्चे,

1. जिन्होंने सर्व खज़ानों से स्वयं को सम्पन्न नहीं किया है, लेकिन थोड़ा बहुत यथा शक्ति जमा किया है, वह है 'महादानी।'

2. 'महादानी' पुरूषार्थ कराने की युक्तियां या हुल्लास, उमंग में लाने की युक्तियां बताते हुए, कमज़ोर आत्माओं द्वारा पुरूषार्थ कराने के निमित्त बनते हैं।

3. स्मृति दिलाते हुए, समर्थी में लाने के निमित्त बनते हैं - अपने शक्तियों का सहयोग नहीं दे पाते, लेकिन रास्ता स्पष्ट दिखाने के निमित्त बनते हैं। ऐसे करो, ऐसे चलो, इस तरह मार्ग दर्शन कराने के निमित्त बनते हैं।

4. दूसरा, मार्गदर्शन कराने वाले।

05.05.77

मन की बात... बाप-दादा के साथ

मैं आत्मा :-

मीठे बाबा, आजकल के वातावरण में चारों ओर की आत्मा कौन सी बात के बन्धन वश हैं ?

बापदादा :-

प्यारे बच्चे, आजकल के वातावरण में चारों ओर की आत्मा किसी न किसी बात के बन्धन वश हैं। वह है :

- कोई तन के दु:ख के वशीभूत,
- कोई सम्बन्ध के वशीभूत,
- कोई इच्छाओं के वशीभूत,
- कोई अपने संस्कार जो कि दु:खदाई संस्कार हैं, दु:खदाई स्वभाव हैं, उनके दु:ख के वशीभूत,
- कोई प्रभु-प्राप्ति न मिलने के अशान्ति में भटकने के दु:ख वशीभूत,
- कोई जीवन का लक्ष्य स्पष्ट न होने के कारण परेशान
- कोई पशुओं की तरह खाया-पिया, जीवन बिताया, लेकिन फिर भी संतुष्टता नहीं,
- कई साधना करते, त्याग करते, अध्ययन करते, फिर भी मंजिल को प्राप्त नहीं होते, पुकारने, चिल्लाने के ही दु:ख के वशीभूत,

ऐसे अनेक प्रकार के बन्धनों वश, दु:ख- अशान्ति के वश आत्माएं अपने को लिबरेट करना चाहते हैं।

05.05.77

05-05-77 अव्यक्त वाणी का मुख्यबिंदु

खजाने से सम्पन्न बनो

वरदानी बच्चे स्वयं को जमा कीए हुए खजानों को अर्थात् स्वयं की शक्ती स्वयं के गुण द्वारा, स्वयं के ज्ञान खजाने द्वारा

निर्बल आत्माओं को वरदान द्वारा हीमत, हुल्लास की शक्ति और खुशी का खजाना, अपने सहयोग की शक्ती और खुशी का खजाना देकर शक्तीशाली बना देते

05-05-77 की अव्यक्त वाणी से स्वमान

मैं वरदानी आत्मा हूँ।

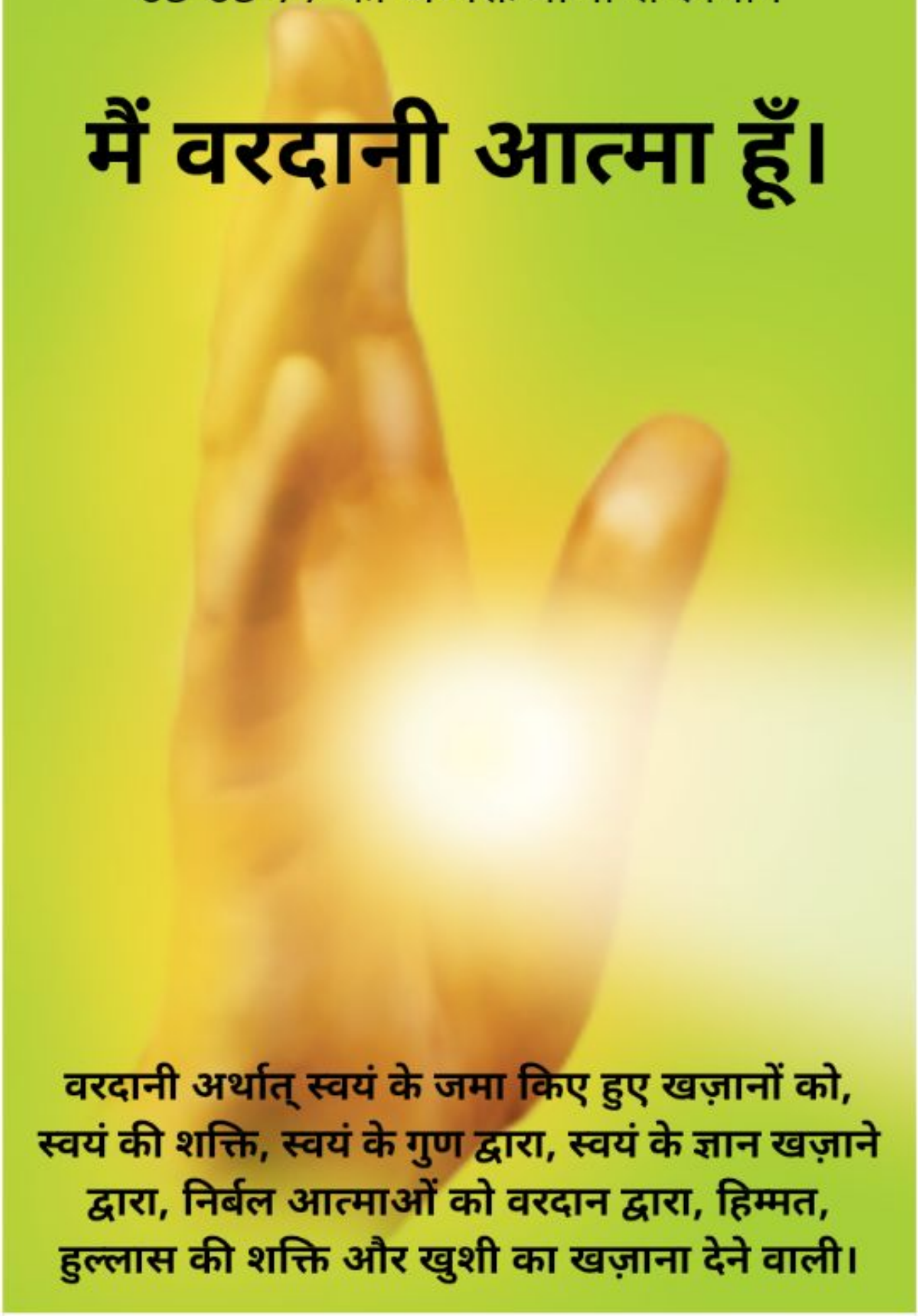

वरदानी अर्थात् स्वयं के जमा किए हुए खज़ानों को, स्वयं की शक्ति, स्वयं के गुण द्वारा, स्वयं के ज्ञान खज़ाने द्वारा, निर्बल आत्माओं को वरदान द्वारा, हिम्मत, हुल्लास की शक्ति और खुशी का खज़ाना देने वाली।

05-05-77

वरदानी, महादानी और दानी आत्माओं के लक्षण

1 वरदानी

'वरदानी' बच्चे, स्वंय के जमा किए हुए खजानों को अर्थात् स्वंय की शक्ति, स्वय के गुण द्वारा, स्वय के ज्ञान खजाने द्वारा, निर्बल आत्माओं को वरदान द्वारा, हिम्मत, हल्लास की शक्ति और खुशी का खजाना, अपने सहयोग की शक्ति से देकर, उन कमजोर को शक्तिशाली बना देते हैं।

2 महादानी

'महादानी' पुरूषार्थ कराने की युक्तियां या हुल्लास, उमंग में लाने की युक्तिया बताते हुए, कमजोर आत्माओं द्वारा पुरूषार्थ करने के निमित बनते हैं।

3 दानी आत्मायें

'दानी' बच्चे, जो सुना, जो अच्छा लगा, जो अनुभव किया, वह वर्णन द्वारा आत्माओं को बाप तरफ आर्कषण करने के निमित बनते हैं।